

अध्याय ~21

रस

रस काव्य की आत्मा है। संस्कृत में कहा गया है कि 'रसात्मकम् वाक्यम् काव्यम्' अर्थात् रसयुक्त वाक्य ही काव्य है। काव्य में रस का वही स्थान है जो शरीर में आत्मा का है। रस अन्तःकरण की वह शक्ति है जिसके कारण इन्द्रियाँ अपना कार्य करती हैं। रस आनन्द रूप है और यही आनन्द विशाल व विशद का अनुभव है।



- रस (Sentiments) का शाब्दिक अर्थ 'आनन्द' है। किसी भी काव्य अथवा साहित्य को पढ़ने, सुनने या नाटक आदि को देखने से मन में जो आनन्द की अनुभूति होती है, उसे ही 'रस' कहते हैं। रस को काव्य की आत्मा/प्राणतत्व भी कहा जाता है।
- सर्वप्रथम आचार्य भरतमुनि ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ नाट्यशास्त्र में रसों की विवेचना की थी, इन्हें रस सम्प्रदाय के प्रवर्तक भी कहा जाता है।

रस के अंग/अव्यव

रस के मुख्य रूप से चार अंग माने जाते हैं, जो निम्न प्रकार हैं

1. **स्थायी भाव** अर्थात् भाव की प्रधानता। हृदय में मूलरूप से विद्यमान रहने वाले भावों को स्थायी भाव कहते हैं। स्थायी भाव को रसों का आधार माना गया है। एक-रस के अर्थ में अर्थात् मूल भाव में एक ही स्थायी भाव रहता है। बाद के कुछ आचार्यों ने 9 स्थायी भावों में 2 स्थायी भावों को और जोड़ दिया, जिससे इनकी संख्या 11 हो गई। स्थायी भावों की संख्या 9 है, इसलिए इन्हें **नवरस** भी कहा जाता है।

रसों के स्थायी भाव

रस	स्थायी भाव
शृंगार रस	रति
हास्य रस	हास (हँसी)
करुण रस	शोक (दुख)
वीर रस	उत्साह
रौद्र रस	क्रोध
भयानक रस	भय
बीभत्स रस	जुगुप्सा/घृणा
अद्भुत रस	विस्मय/आश्चर्य
शान्त रस	निर्वेद
वत्सल्य रस	वात्सल्य रति
भक्ति रस	देव रति/अनुराग

2. **विभाव** जो व्यक्ति, वस्तु या परिस्थितियाँ स्थायी भावों को उद्दीपन या जागृत करती हैं, उन्हें विभाव कहते हैं। विभाव दो प्रकार के होते हैं

- **आलम्बन विभाव** जिन वस्तुओं या विषयों पर आलम्बित होकर (सहारा पाकर) स्थायी भाव उत्पन्न होते हैं, उन्हें आलम्बन विभाव कहते हैं; जैसे—नायक-नायिका।

आलम्बन विभाव के भी दो भेद होते हैं

(i) **आश्रय** जिस व्यक्ति के मन में रति आदि भाव उत्पन्न होते हैं, उसे आश्रय कहते हैं।

(ii) **विषय** जिस वस्तु या व्यक्ति के लिए आश्रय के मन में भाव उत्पन्न होते हैं, उसे विषय कहते हैं।

- **उद्दीपन विभाव** स्थायी भाव को उद्दीपन या तीव्र करने वाले कारण उद्दीपन विभाव होते हैं। नायक-नायिका का रूप सौन्दर्य, पात्रों की चेष्टाएँ, ऋतु, उद्यान, चाँदनी, देश-काल आदि उद्दीपन विभाव होते हैं।

3. **अनुभाव** मन के भावों को प्रकट करने वाले शारीरिक विकार को अनुभाव कहते हैं। अनुभाव की संख्या 8 है; जो निम्न प्रकार हैं

(i) स्तम्भ (ii) स्वेद (iii) रोमांच (iv) स्वर-भंग (v) कम्प
(vi) विवर्णता (रंगहीनता) (vii) अश्रु (viii) प्रलय (संज्ञाहीनता)।

4. **संचारी या व्यभिचारी भाव** मन में उत्पन्न होने वाले अस्थिर मनोविकारों को संचारी भाव कहते हैं। संचारी भावों की संख्या 33 है; जो निम्न प्रकार हैं

संचारी भाव

- | | | | | |
|---|--|------------------|--------------------|------------|
| 1. हर्ष | 2. विषाद | 3. त्रास | 4. लज्जा (ब्रीड़ा) | ५. ग्लानि |
| 6. चिन्ता | ७. शंका | 8. असूया | 9. अमर्ष | 10. मोह |
| 11. गर्व | १२. उत्सुकता | 13. उग्रता | १४. चपलता | 15. दीनता |
| 16. जड़ता | 17. आवेग | 18. व्याधि (रोग) | 19. धृति | 20. मति |
| 21. विबोध | 22. वितर्क | 23. श्रम | 24. आलस्य | 25. निद्रा |
| 26. स्वप्न | 27. स्मृति | 28. मद | 29. उन्माद | 30. मरण |
| 31. अपस्मार (मूर्च्छा) | 32. निर्वेद (अपने को कोसना या धिक्कारना) | | | |
| 33. अवहित्था (हर्ष आदि भावों को छिपाना) | | | | |

रस के प्रकार

रसों की संख्या को लेकर अनेक मतभेद रहे हैं। भरत मुनि ने रसों की संख्या 8 मानी है। पण्डितराज जगन्नाथ ने रसों की संख्या 9 मानी है। कुछ विद्वानों ने रसों की संख्या 11 मानी है। प्रमुख रसों का विवरण इस प्रकार है

शृंगार रस

आचार्य भोजराज ने शृंगार को **रसराज** कहा है। शृंगार रस का आधार स्त्री-पुरुष का पारस्परिक आकर्षण है, जिसे काव्यशास्त्र में **रति** स्थायी भाव कहते हैं। शृंगार रस में सुखद और दुःखद दोनों प्रकार की अनुभूतियाँ होती हैं। शृंगार रस के दो भेद होते हैं। जिनका वर्णन इस प्रकार है

- (i) **संयोग शृंगार** जहाँ नायक-नायिका के संयोग या मिलन का वर्णन होता है, वहाँ संयोग शृंगार होता है;

जैसे—

“कहत, नटत, रीझत, खीझत, मिलत, खिलत, लजियात।
भरै भौन मैं करत हैं, नैन ही सब बात।”

उपर्युक्त उदाहरण में बिहारी कवि ने एक नायक-नायिका के प्रेमपूर्ण चेष्टाओं का बड़ा वर्णन किया है। अतः यहाँ संयोग शृंगार है।

- (ii) **वियोग या विप्रलम्भ शृंगार** जहाँ वियोग की अवस्था में नायक-नायिका के प्रेम का वर्णन होता है, वहाँ वियोग या विप्रलम्भ शृंगार होता है;

जैसे—

“मधुबन तुम क्यों रहत हरे, बिरह बियोग स्याम
सुन्दर के ठाढ़े क्यों न जरें।”

उपर्युक्त उदाहरण में सूरदास जी ने कृष्ण के वियोग में राधा के मनोभावों एवं दुःख का वर्णन किया है। अतः यहाँ वियोग शृंगार है।

हास्य रस

जब किसी व्यक्ति की विकृत वेशभूषा, क्रियाकलाप, हाव-भाव आदि को देखकर मन में जो उल्लास उत्पन्न होता है, उसे हास्य रस कहते हैं;

जैसे—

“जेहि दिसि बैठे नारद फूली। सो दिसि तेहि न विलोकी भूली।।
पुनि पुनि मुनि उकसहिं अकुलाहिं। देखि दसा हरिगन मुसकाहिं।।”

यहाँ **स्थायी भाव** हास तथा **संचारी भाव** हर्ष, चपलता, उत्सुकता आदि हैं।

करुण रस

जब किसी प्रिय व्यक्ति, वस्तु की हानि से अथवा अपनों से बिछुड़ जाने या दूर चले जाने से मन एवं हृदय में जो वेदना या दुःख होता है, उसे करुण रस कहते हैं। इस रस में निःश्वास होना, छाती पीटना, रोना, भूमि पर गिरना आदि का भाव व्यक्त होता है;

जैसे—

“सोक बिकल सब रोवहिं रानी। रूपु सीलु बलु तेजु बखानी।।
करहिं बिलाप अनेक प्रकारा। परहिं भूमितल बारहिं बारा।।”

यहाँ **स्थायी भाव** शोक तथा **संचारी भाव** मोह, उद्वेग, भूमि पर गिरना आदि हैं।

वीर रस

जब युद्ध अथवा किसी कठिन कार्य को करने के लिए मन में जो **उत्साह** की भावना विकसित होती है, उसे वीर रस कहा जाता है। इस रस में शत्रु पर विजय प्राप्त करने, यश प्राप्त करने आदि के भाव को व्यक्त किया जाता है;

जैसे—

“मैं सत्य कहता हूँ सखे! सुकुमार मत मानो मुझे।
यमराज से भी युद्ध में प्रस्तुत सदा जानो मुझे।।
हे सारथे! हैं द्रोण क्या? आवें स्वयं देवेन्द्र भी।
वे भी न जीतेंगे समर में आज क्या मुझसे कभी।।”

यहाँ **स्थायी भाव** उत्साह तथा **संचारी भाव** गर्व, हर्ष, उत्सुकता आदि हैं।

रौद्र रस

विरोधी पक्ष द्वारा किसी व्यक्ति, देश, समाज या धर्म का अपमान या अपकार करने से उसकी प्रतिक्रिया में जो क्रोध उत्पन्न होता है, उसे रौद्र रस कहते हैं;

जैसे—

श्री कृष्ण के सुन वचन, अर्जुन क्रोध से जलने लगे।
सब शोक अपना भूलकर, करतल युगल मलने लगे।।

यहाँ **स्थायी भाव** क्रोध तथा **संचारी भाव** अमर्ष-उग्रता, आवेग, कम्प आदि हैं।

भयानक रस

जब किसी भयानक व्यक्ति, वस्तु, जीव आदि को देखने या उससे सम्बन्धित वर्णन करने से तथा किसी अनिष्टवादी घटना का स्मरण करने से मन में जो व्याकुलता से **भय** उत्पन्न होता है उसे ही भयानक रस कहते हैं;

जैसे—

“एक ओर अजगरहि लखि, एक ओर मृगराय।
विकल बटोही बीच ही, परयो मूर्च्छा खाया।।”

यहाँ भय **स्थायी भाव** तथा **संचारी भाव** आवेग, त्रास आदि हैं।

वीभत्स रस

वीभत्स रस का स्थायी भाव **जुगुप्सा** या **घृणा** है। जब किसी घृणित वस्तु, व्यक्ति को देखकर, उनके सम्बन्ध में विचार करके या उनके सम्बन्ध में सुनकर मन में उत्पन्न होने वाली घृणा को ही वीभत्स रस कहते हैं;

जैसे—

“सिर पर बैठयो काग आँख दोउ खात निकारत।
खींचत जीभहिं स्यार अतिहि आनन्द उर धारत।।
गीध जाँघ को खोदि खोदि कै मांस उपारत।
स्वान आंगुरिन काटि-काटि कै खात विदारत।।”

यहाँ **स्थायी भाव** जुगुप्सा या घृणा तथा **संचारी भाव**, मोह, ग्लानि, आवेग, व्याधि आदि हैं।

अद्भुत रस

जब किसी अलौकिक, आश्चर्यजनक दृश्य या वस्तु को देखकर सहसा विश्वास नहीं होता और मन में आश्चर्य (विस्मय) का भाव उत्पन्न हो, उसे ही अद्भुत रस कहते हैं;

जैसे—

“अम्बर में कुन्तल जाल देख, पद के नीचे पाताल देख,
मुट्ठी में तीनों काल देख, मेरा स्वरूप विकराल देख,
सब जन्म मुझी से पाते हैं, फिर लौट मुझी में आते हैं।”

यहाँ **स्थायी भाव** विस्मय और **संचारी भाव** भ्रम, औत्सुक्य, चिन्ता, त्रास आदि हैं।

शान्त रस

जब तत्त्व ज्ञान की प्राप्ति अथवा संसार से वैराग्य होने पर परमात्मा के वास्तविक रूप का ज्ञान होने पर मन को जो शान्ति मिलती है तब शान्त रस की उत्पत्ति होती है। अन्य शब्दों में, जहाँ न दुःख होता है, न द्वेष होता है, मन सांसारिक कार्यों से मुक्त हो जाता है और मनुष्य वैराग्य प्राप्त कर लेता है उसे शान्त रस कहते हैं;

जैसे—

“सुत वनितादि जानि स्वारथरत न करु नेह सबही ते।
अन्तहिं तोहि तजेंगे पामर! तू न तजै अबही ते॥
अब नाथहिं अनुराग जाग जड़, त्यागु दुरदसा जीते।
बुझै न काम अगिनि 'तुलसी' कहूँ विषय भोग बहु घी ते॥”

यहाँ **स्थायी भाव निर्वेद तथा संचारी भाव धृति, मति, विमर्श आदि हैं।**

वात्सल्य रस

वात्सल्य रस का सम्बन्ध छोटे बालक-बालिकाओं के प्रति माता-पिता एवं सगे-सम्बन्धियों का प्रेम एवं ममता के भाव से है। हिन्दी कवियों में सूरदास ने वात्सल्य रस को पूर्ण प्रतिष्ठा दी है। तुलसीदास की विभिन्न कृतियों के बालकाण्ड में वात्सल्य रस की सुन्दर रचना की गई है;

जैसे—

“किलकत कान्ह घुटुरुवनि आवत।
मनिमय कनक नन्द के आँगन बिम्ब पकरिबे धावत॥
कबहुँ निरखि हरि आप छाँह को कर सो पकरन चाहत।
किलकि हँसत राजत द्वै दतियाँ पुनि पुनि तिहि अवगाहत॥”

यहाँ **स्थायी भाव वत्सलता या स्नेह तथा संचारी भाव हर्ष, गर्व, उत्सुकता हैं।**

भक्ति रस

इसका स्थायी भाव देव रति अर्थात् ईश्वर के प्रति प्रेम है। भक्ति रस शान्त रस से भिन्न है। शान्त रस जहाँ निर्वेद या वैराग्य की ओर ले जाता है वहीं भक्ति रस ईश्वर की भक्ति या ईश्वर के प्रति प्रेम की ओर ले जाता है। भक्ति रस के पाँच भेद हैं—शान्त, प्रीति, प्रेम, वत्सल और मधुर;

जैसे—

“मेरे तो गिरिधर गोपाल दूसरो न कोई।
जाके सिर मोर मुकुट मेरो पति सोई॥
साधुन संग बैठि बैठि लोक-लाज खोई।
अब तो बात फैल गई जाने सब कोई॥”

यहाँ **स्थायी भाव ईश्वर विषयक रति तथा संचारी भाव हर्ष, निर्वेद आदि हैं।**

वस्तुनिष्ठ प्रश्नावली

- रस सिद्धान्त के आदि प्रवर्तक कौन हैं?
(a) भरतमुनि (b) भानुदत्त (c) विश्वनाथ (d) भामह
- आचार्य भरत ने कितने रसों का उल्लेख किया है?
(a) सात (b) आठ (c) नौ (d) दस
- काव्यशास्त्र में हास्य के कितने भेद माने गए हैं?
(a) छः (b) सात (c) चार (d) दो
- काव्यशास्त्र के अनुसार रसों की सही संख्या है
(a) आठ (b) नौ (c) दस (d) ग्यारह
- संचारी भावों की संख्या है
(a) 27 (b) 29 (c) 31 (d) 33
- भक्ति रस की स्थापना किसने की?
(a) भरत ने (b) विश्वनाथ ने (c) रूपगोस्वामी ने (d) मम्मट ने
- सात्विक अनुभाव कितने हैं?
(a) दो (b) चार (c) छः (d) आठ
- निर्जन नटि-नटि पुनि लजियावै। छिन रिसाई छिन सैन बुलावे॥
इस चौपाई में कौन-सा रस है?
(a) संयोग शृंगार (b) वियोग शृंगार (c) करुण रस (d) अद्भुत रस
- आचार्य भरत ने सर्वाधिक सुखात्मक रस किसे माना है?
(a) शृंगार रस (b) हास्य रस (c) वीर रस (d) शान्त रस
- आलम्बन तथा उद्दीपन द्वारा आश्रय के हृदय में स्थायी भाव जागृत होने पर आश्रय में जो चेष्टाएँ होती हैं, उन्हें क्या कहते हैं?
(a) विभाव (b) अनुभाव (c) उद्दीपन (d) संचारी भाव
- मज्जा मांस रुधिर पतनारे। सूनि मिचली कस होइ निहारे॥
पंक्ति में कौन-सा रस है?
(a) रौद्र (b) अद्भुत (c) वीभत्स (d) भयानक
- वीभत्स रस का स्थायीभाव है
(a) निर्वेद (b) विस्मय (c) क्रोध (d) जुगुप्सा
- सर्वाधिक प्राचीन सम्प्रदाय कौन है?
(a) रीति (b) रस (c) वक्रोक्ति (d) अलंकार
- जग असार संकट पुनि नाना। विकल विरत चित साधु समाना॥
उपर्युक्त पंक्तियों में कौन-सा रस है?
(a) वात्सल्य रस (b) वीर रस (c) शान्त रस (d) करुण रस
- असूया क्या है?
(a) एक काव्य दोष (b) एक काव्य गुण (c) एक अलंकार (d) एक संचारी भाव
- अखियाँ हरि दरसन की भूखी। (UPSSSC लेखपाल परीक्षा 2015)
कैसे रहें रूप रस राँची, ए बतियाँ सुनि रूखीं।
उपरोक्त पंक्तियों में कौन-सा रस है?
(a) संयोग शृंगार रस (b) वीर रस (c) वियोग शृंगार रस (d) शान्त रस
- करुण रस का स्थायी भाव क्या है? (UPSSSC लेखपाल परीक्षा 2015)
(a) शोक (b) रति (c) हास्य (d) उत्साह
- शान्त रस का स्थायी भाव है (UPSSSC कनिष्ठ सहायक परीक्षा 2015)
(a) शृंगार (b) ग्लानि (c) निर्वेद (d) रति
- स्थायी भावों की कुल संख्या है (उपनिरीक्षक सीधी भर्ती परीक्षा 2014)
(a) 12 (b) 13 (c) 14 (d) 9
- विस्मय स्थायी भाव किस रस में होता है? (उपनिरीक्षक सीधी भर्ती परीक्षा 2014)
(a) हास्य (b) शान्त (c) अद्भुत (d) वीर

21. “वरदन्त की पंगति कुन्दकली अधराधर पल्लव लोचन की।
चपला चमकै घन बीच जगै छवि मोतिन माल अमोलन की॥
घुंघरारि लटै लटकै मुख ऊपर कुण्डल लाल कपोलन की।
निवछावर प्राण करै ‘तुलसी’ बलि जाऊँ ललाइन बोलन की॥”
इस पद्यांश में कौन-सा रस है? (UPTET 2020)
(a) वात्सल्य (b) करुण (c) शान्त (d) शृंगार
22. “किलक झरे मैं नेह निहारूँ/इन दाँतों पर मोती वारूँ॥”
इन पंक्तियों में रस है
(a) वीर (b) वात्सल्य (c) शान्त (d) शृंगार
23. रस का नाम बताओ। (मध्य प्रदेश व्यावसायिक परीक्षा 2017)
“बिन्ध्य के बासी उदासी तपोव्रतधारी महा बिनु नारि दुखारे।
गोतमतीय तरी, तुलसी, सो कथा सुनि भे मुनिबृन्द सुखारे॥
हैं हैं सिला सब चन्द्रमुखी परसे पद-मंजुल-कंज तिहारे।
कीन्ही भली रघुनायकजू करुना करि कानन को पगु धारे॥”
(a) हास्य रस (b) शृंगार रस (c) वीर रस (d) करुण रस
24. रस का नाम बताइए। (मध्य प्रदेश व्यावसायिक परीक्षा 2017)
“जथा पंख बिनु खग अति दीना। मनि बिनु फन करिबर कर हीना॥
अस मम जीवन बन्धु बिन तोही। जौ जड़ दैव जियावह मोही॥”
(a) शान्त रस (b) भक्ति रस (c) वीर रस (d) करुण रस
25. वात्सल्य रस की सर्वप्रथम चर्चा किसने की?
(a) भरत (b) मम्मट (c) अभिनवगुप्त (d) विश्वनाथ
26. ‘विस्मय’ कौन-सा भाव है? (DSSSB 2015)
(a) संचायी (b) स्थायी (c) विभाव (d) अनुभाव
27. ‘वाक्यं रसात्मकं काव्यम्’ किसका कथन है? (UPTET 2017)
(a) विश्वनाथ (b) मम्मट (c) राजशेखर (d) जगन्नाथ
28. “एक ओर अजगरहिं लिखि एक ओर मृगराय।
विकल बटोही बीच ही पर्यो मूरछा खाय॥” (UPTET 2017)
इन पंक्तियों में प्रयुक्त रस है
(a) रौद्र रस (b) वीर रस (c) भयानक रस (d) करुण रस
29. सही विकल्प चुनिए।
भाव दशा के कारण वचन में आए परिवर्तन को कहते हैं।
(a) वाचिक उद्दीपन (b) वाचिक अनुभाव
(c) वाचिक विभव (d) वाचिक आलम्बन
30. रस ब्रह्म है।
(a) विचार (b) मूर्त (c) आनन्द (d) आहार
31. ‘रौद्र’ रस का स्थायी भाव क्या है? (UPSSSC लेखपाल परीक्षा 2015)
(a) क्रोध (b) भय (c) उत्साह (d) विस्मय
32. जुगुप्सा का स्थायी भाव किस रस से सम्बन्धित है?
(a) रौद्र रस (b) वीभत्स रस
(c) अद्भुत रस (d) करुण रस
33. ‘जहाँ सुमति तहँ संपति नाना, जहाँ कुमति तहँ विपति निदाना’
पद में कौन-सा रस है? (UPTET 2016)
(a) करुण (b) भयानक (c) शृंगार (d) शान्त
34. रसों की उदित और उद्दीप्त करने वाली सामग्री क्या कहलाती है?
(a) विभाव (b) अनुभाव (c) स्थायीभाव (d) संचारीभाव
35. रस का नाम बताइए। (मध्य प्रदेश व्यावसायिक परीक्षा 2017)
“प्रिय-पति वह मेरा प्राण प्यारा कहाँ है।
दुख-जलधि निमग्रा का सहारा कहाँ है।
अब तक जिसको मैं देख के जी सकी हूँ।
वह हृदय हमारा नेत्र-तारा कहाँ है॥”
(a) हास्य रस (b) शृंगार रस (c) वीर रस (d) करुण रस
36. “बोरौ सबै रघुवंश कुठार की धार में बारन बजि सरत्थहिं।
बान की वायु उड़ाव के लच्छन लच्छ करौ अरिहा समरत्थहिं॥”
इन काव्य पंक्तियों में कौन-सा रस है? (UPTET 2016)
(a) रौद्र रस (b) भयानक रस (c) वीभत्स रस (d) वीर रस
37. उत्साह स्थायी भाव जब विभाव, अनुभाव और संचारी भावों में परिपुष्ट होकर आस्वाद्य हो जाता है, तब कौन-सा रस होता है?
(a) शृंगार रस (b) रौद्र रस (c) वीर रस (d) करुण रस
38. “मेरे तो गिरिधर गोपाल दूसरो न कोई।
जाके सिर मोर मुकुट मेरो पति सोई॥”
उपरोक्त पंक्तियों में कौन-सा रस है?
(a) शान्त (b) शृंगार (c) करुण (d) हास्य
39. “शोभित कर नवनीत लिए
घुटरुनि चलत रेनु तन मण्डित मुख दधि लेप किए॥”
उपरोक्त पंक्तियों में कौन-सा रस है?
(a) वात्सल्य (b) करुण (c) शृंगार (d) शान्त
40. किस रस को रसराज कहा जाता है? (UPSSSC 2017)
(a) हास्य (b) शृंगार (c) वीर (d) शान्त
41. शान्त रस का स्थायी भाव है। (UP बी.एड. 2019)
(a) भक्ति (b) वत्सल (c) निर्वेद (d) जुगुप्सा
42. आँखिया हरि दरसन की भूखी। (UPSSSC लेखपाल परीक्षा 2015)
कैसे रहें रूप रस राँची, ए बतियाँ सुनि रूखी।
उपरोक्त पंक्तियों में कौन-सा रस है?
(a) वीर रस (b) वियोग शृंगार रस
(c) शान्त रस (d) संयोग शृंगार रस
43. करुण रस का स्थायीभाव क्या है? (UPSSSC लेखपाल परीक्षा 2015)
(a) उत्साह (b) शोक (c) रति (d) हास्य
44. चमक उठी सन सत्तावन में वो तलवार पुरानी थी—रस भेद बताइए। (UP पुलिस कांस्टेबल परीक्षा 2018)
(a) भक्ति रस (b) वीर रस (c) हास्य रस (d) शृंगार रस

उत्तरमाला

1. (a)	2. (b)	3. (a)	4. (b)	5. (d)	6. (c)	7. (d)	8. (a)	9. (b)	10. (b)
11. (c)	12. (d)	13. (b)	14. (c)	15. (d)	16. (c)	17. (a)	18. (c)	19. (d)	20. (c)
21. (a)	22. (b)	23. (a)	24. (d)	25. (b)	26. (b)	27. (a)	28. (c)	29. (b)	30. (c)
31. (a)	32. (b)	33. (d)	34. (a)	35. (d)	36. (a)	37. (c)	38. (b)	39. (a)	40. (b)
41. (c)	42. (b)	43. (b)	44. (b)						